International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 25-01-2019; Accepted: 26-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 74-76

रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

प्रदीप कुमार सिंह[1], डॉ. जय सिंह[2]
[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों का चयन करके जो ग्रामीण व शहरी, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते है का अवलोकन किया गया है। जिसमें पाया गया कि शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया और ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया।

मूल शब्दः रीवा जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षक, शैक्षिक अभिक्षमता

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव जीवन की आधार शिला है। व्यक्ति को जन्म से ही शिक्षा की आवश्यकता होती है। बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए एक व्यवस्थित शिक्षा की परम् आवश्यकता होती है।

एक अच्छी शिक्षा माता–पिता के समान पालन–पोषण करती है, पिता की तरह बच्चे के जीवन में उचित मार्गदर्शन करके अपने कार्यो में लगाती है तथा एक पत्नि की भॉति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है और जीवन पर्यन्त साथ निभाती है।

अभिक्षमता मानव क्षमता का एक प्रमुख अंग है। इसका तात्पर्य विभिन्न क्षेत्रों में कौशल या ज्ञान प्राप्त करने की अर्जित तथा जन्मजात योग्यता से है। इसके आधार पर व्यक्तिगत विभिन्नताओं को बताया जा सकता है। फ्रीमैन के अनुसार अभिक्षमता का तात्पर्य गुणों तथा विशेषताओं के एक ऐसे संयोग से होता है जिससे विशिष्ट ज्ञान तथा संगठित अनुक्रियाओं के कौशल जैसे किसी भाषा बोलने की क्षमता, यांत्रिक कार्य करने की क्षमता का पता लगाया जा सकता है। अभिक्षमता बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ व्यक्ति के अन्दर शिक्षण के प्रति एक उपयुक्त मात्रा में उपलब्धता तथा क्षमता का विकास करता है।

अतः शोध द्वारा यह ज्ञात करना अत्यन्त आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता के प्रभाव का स्तर कैसा है तथा इसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर किस सीमा तक पड़ रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण म.प्र. के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता के प्रभाव व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ
प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

शिक्षको के शैक्षिक अभिक्षमता का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से कुल 180 शिक्षकों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – सिंह, ममता (2007)[1], श्रीवास्तव, डी.एस. (2006)[2], त्रिपाठी, सुनील मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017)[3], तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017)[4] एवं गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007)[5], पाठक, पी.डी. (2007)[6]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक 01: "शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1: शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन

समूह		शहरी शासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक	शहरी अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक
समूह की संख्या (N)		90	90
मध्यमान (M)		63.93	62.56
मानक विचलन (D)		11.14	10.80
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.84	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (90-1) + (90-1) = 89+89 = 178

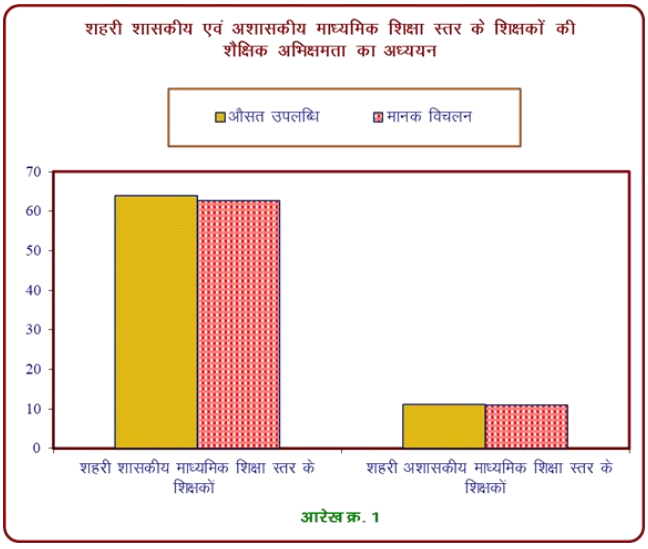

आरेख क्र. 1

उपर्युक्त तालिका क्र. 1 में शोध क्षेत्र के शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन, दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 63.93 तथा 62.56 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.14 तथा 10.80 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण ;C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.84 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांकः 02 "ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन

समूह		ग्रामीण शासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक	ग्रामीण अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक
समूह की संख्या (N)		90	90
मध्यमान (M)		60.60	55.47
मानक विचलन (SD)		12.10	10.33
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3ण्06	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (90-1) + (90-1) = 79+79 = 178

उपर्युक्त तालिका क्र. 2 में शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 60.60 तथा 55. 47 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.10 तथा 10.33 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें ब्र का मान 3.06 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया।

इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

अतः परिकल्पना क्र. 2 निरसित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है

- शोध क्षेत्र के शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन, दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 63.93 तथा 62.56 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.14 तथा 10.80 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण ;C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.84 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।
- शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 60.60 तथा 55.47 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.10 तथा 10.33 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण ;C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.06 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ

1. सिंह, ममता (2007), प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies, Vol. 58 PP. 85.
2. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.
3. त्रिपाठी, सुनील मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017) "जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2(1):38-42
4. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017) "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2119-23.
5. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
6. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.